पं0 दीनदयाल उपाध्याय का साहित्य

डॉ0 नीता सिंह
असिसटेंट प्रोफेसर, किशोरी रमण महाविद्यालय, मथुरा

''बड़े शौक से सुन रहा था जमाना,
तुम्हीं सो गये दास्तां कहते–कहते''

पंडित जी का जीवन राष्ट्र को समर्पित जीवन था। उन्होंने शरीर का कण–कण व जीवन का क्षण–क्षण राष्ट्र के नाम कर दिया था। सारा देश उनका घर था, सारा समाज उनका परिवार। उनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य राष्ट्रसेवा था। उनका मस्तिष्क अतीत से जुड़ा हुआ था, वर्तमान में सक्रिय वह भविष्य के लिए चिंतित रहता था। वे पाश्चात्य विचारधारा को प्रगति का प्रतीक नहीं मानते थे और न ही रूढ़िवादियों की तरह गली–सड़ी मान्यताओं और परंपराओं से चिपके रहते थे। व्यस्त जीवन में अध्ययन, मनन, चिन्तन और फिर लिखने का समय कहाँ से निकले इसके लिए दो स्थानों का प्रायः वे प्रयोग करते थे।

1. शौचालय
2. रेल–यात्रा

दीनदयाल जी को शौच से निवृत्त होने में पर्याप्त समय लगता था, अतः वे उसका उपयोग अध्ययन में करते थे। इसी प्रवृत्ति के कारण एक बार ये पुलिस की पकड़ में आ गए। पुलिस कुछ कार्यकर्त्ताओं की तलाश में थी। पुलिस आ रही है, ऐसा जानकर शेष अतिधकारीगण तो बच निकले, किन्तु दीनदयाल जी न निकल पाए और जब शौचालय से बाहर आए, तो पुलिस ने उन्हें बन्दी बना लिया।

वे प्रायः पैसेन्जर ट्रेन से सफर करते थे और पैसेन्जर में भी प्रथम श्रेणी में, जहाँ के डिब्बे प्रायः यात्री ही सहस्त्रों मील का सफर करते हैं। पैसेन्जर ट्रेन चलती आहिस्ता है और गन्तव्य स्थान पर पहुँचने में समय लगाती है। आहिस्ता चलने से लिखने में बाधा नहीं पड़ती और गन्तव्य स्थान आने में समय लगने से लेख पूरा हो जाता है। वार्षिक अधिवेशनों के अनेक प्रस्ताव वे गाड़ी में ही लिखते और टाइपिस्ट साथ होता, तो उससे टाइप करवाते।

उनके लेख प्रायः पांचजन्य, राष्ट्रधर्म तथा ऑर्गनाइजर में छपते थे। 'ऑर्गनाइजर में 'पोलीटिकल डायरी' के रूप में नियमित लिखा करते थे। समय–समय पर लिखे गए ये लेख देश की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक नीतियों के पथ–प्रदर्शक हैं। उनके गम्भीर चिन्तन, राष्ट्र हित, सोचने–समझने की शैली के परिचायक हैं।

इस प्रकार उन्होंने अनेक लेख लिखे, पुस्तकें लिखी। 'सम्राट चन्द्रगुप्त' तथा 'जगद्गुरू श्री शंकराचार्य' उनके द्वारा लिखित जीवनियाँ है। 'भारतीय अर्थ–नीति' विकास की एक दिषा

उनके आर्थिक चिन्तन का प्रसाद है। 'राष्ट्र–चिन्तन' तथा 'राष्ट्र–जीवन की दिशा' राष्ट्र, समाज, राजनीति, धर्मनीति तथा संस्कृति पर समय समय लिखे, उनके लेखों एवं भाषणों के संग्रह है।। सम्राट चन्द्रगुप्त की भूमिका में उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों से मत भिन्नता की बात स्पष्ट की है। इसी प्रकार 'जगद्गुरू श्री शंकराचार्य' की प्रकाशकीय भूमिका के ये शब्द भी विचार करने योग्य है, पं0 दीनदयाल उपाध्याय की सशक्त लेखनी से लिखित यह पावन चरित्र हमें केवल एक महान सन्त पुरूष का ही दर्शन नहीं कराता है, अपितु महान हिन्दू धर्म को युगानुकूल प्रतिष्ठापित कर हिन्दू राष्ट्र को नवचेतना प्रदान करने वाले एक महान् संगठक का जीवन आदर्श भी प्रस्तुत करता है। 'राष्ट्र चिन्तन' उनके 19 महत्वपूर्ण भाषणों का संग्रह है। 'राष्ट्र–जीवन की दिशा' उनके 18 भाशाओं तथा लेखों का संग्रह है।

पंचवर्षीय योजनाओं पर भी आपने अंग्रेजी में 'दी टू प्लैस–प्रामिसेस परफार्मेन्स एण्ड प्रासपेक्टस' नाम की किताब लिखी, जो आर्थिक क्षेत्र में एक माननीय ग्रन्थ के रूप में प्रसिद्ध है। इसके अतिरिक्त हमारा कश्मीर, महान् विश्वासघात, अखण्ड भारत, टैक्स या लूट आदि अनेक लघु–पुस्तकें लिखकर सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक साहित्य में आपने अमूल्य सामग्री प्रस्तुत की।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अग्रवाल जे0 सी0:1972 "विद्यालय प्रशासन" , आर्य बुक डिपो, करौलबाग, नई दिल्ली–51
2. भिषीकर, चन्द्रशेखर परमानन्दः1991, द्वितीय संस्करण, "पं0 दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन" खण्ड–5 (राष्ट्र की अवधारणा), सुरुचि प्रकाशन, झण्डेवालान, नईदिल्ली–110055
3. उपाध्याय, दीनदयालः2004, नवम् संस्करण, "एकात्म मानववाद", जागृति प्रकाशन,नोएडा–201301